आज की पीढ़ी जिस प्रकार की शिक्षा प्रणाली के साथ बढ़ रही है **वह प्रणाली यह सिखाती है कि सत्य को स्वयं ही सीखें। जो लोग आज सत्य की खोज कर रहे हैं, वे प्रश्न पूछते हैं कि "सत्य क्या है ?"** कई शताब्दियों पहले पिलातुस ने यही प्रश्न यीशु से **पूछा था,** यूहन्ना १८:३८। जब आप सत्य को सीख सकते हैं तब आपको मनुष्य की विचारधारा तथा तर्क से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये।

सत्य को समझना

फिलिप्पुस ने कूश देश के खोज से, जो यशायाह भविष्यवक्ता की पुस्तक पढ़ रहा था, पूछा "तुम जो पढ़ रहे हो क्या उसे समझते हो ?" उसने उत्तर दिया "जब तक कोई मनुष्य मुझे न समझाये तो मैं क्यों कर समझूंगा" प्रेरितों ८:३०-३१। सही अगुवाई और ईश्वरीय प्रकाश ही, सत्य जानने के इच्छुक लोगों को अच्छी समझ दे सकते हैं। "सत्य" इस शब्द की परिभाषा जो वेबस्टर ने की है वह यह है– सच्चा होने के लक्षण या स्थिति, खरा होना, सत्य होने के मापदण्ड से सामन्जस्य, वह जो सच है।

सत्य को जानने के लिये, यह समझना महत्वपूर्ण है कि सत्य को परमेश्वर से पृथक नहीं किया जा सकता, "आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था वचन परमेश्वर था" यूहन्ना १:१। "और वचन (जो कि ईश्वर था) देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया(और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा) यूहन्ना १:१४। यूहन्ना १४:६ में यीशु ने कहा, "मार्ग, सच्चाई(देहधारी वचन)और जीवन मैं ही हूं। मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।" यीशु ने यह भी कहा, "जो कोई सत्य का है वह मेरा शब्द सुनता है" यूहन्ना १८:३७।

जब तक हम सत्य को (परमेश्वर का वचन) ग्रहण नहीं करते, हम यीशु को व्यक्तिगत उद्धारकर्त्ता ग्रहण नहीं कर सकते क्योंकि वे अविभाज्य है। इसी प्रकार यदि हम सत्य को ठुकराते हैं या परमेश्वर के वचन के किसी भाग को नकारते हैं तो हम हमारी आत्मा के एक-मात्र उद्धारकर्त्ता को भी नकारते हैं। "तुम सत्य को जानोगे (यीशु को) और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। यदि पुत्र (यीशु) तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे।" यूहन्ना ८:३२, ३६।

यह अत्यंत आवश्यक है कि, हम सम्पूर्ण सत्य को ग्रहण करें और सत्य के सिवाय कुछ नहीं। सत्य की अनुपस्थिति भयंकरता से भ्रमित करने वाली है, जैसे सत्य में कुछ और जोड़ना या सत्य का परिवर्तन करना। क्योंकि आधा सत्य आधा झूठ होता है। पवित्र शास्त्र का हरएक वचन, "परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है" २रा तिमोथी ३:१६। किसी को यह अधिकार नहीं दिया गया है कि वह परमेश्वर के वचन में फेर बदल करे, ताकि वह वचन अपने स्वयं के मत से सहमत हो, या पवित्र शास्त्र के एक भाग को चुन ले और दूसरे भाग को छोड़ दे। यदि कोई मनुष्य पवित्र शास्त्र के किसी एक भाग का अर्थ इस प्रकार लगाता है कि वह अर्थ पवित्र शास्त्र के किसी अन्य भाग से मतभेद उत्पन्न करता है, तो उस व्यक्ति ने जो अर्थ लगाया है वह गलत है। क्योंकि सत्य अपने स्वयं में मतभेद उत्पन्न नहीं करता। समस्त पवित्र शास्त्र की आयतें यदि सही अर्थ के साथ रखी जाती हैं तो वे एक सच्चे विश्वासी के लिये सत्य को प्रगट करती हैं तथा आयतों में कोई मतभेद नहीं होता। "पर पहले जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्-वाणी के किसी अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" २ पतरस १:२०-२१। इसलिये पौलुस प्रेरित ने यह निर्देश दिया "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहण योग्य और ऐसा कार्य करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर जो लज्जित न होने पाये और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो" २ तिमु २:१५।

स्थापित सत्य

एक बार जब सत्य स्थापित हो जाता है तो उसे परिवर्तित नहीं किया जा सकता। सत्य सदैव सत्य है। सत्य पृथकतावादी नहीं है, और न ही वह प्रतिस्थापन और विनाश करता है। सत्य, शक्ति एवं सहमति प्रदान करने वाला रचनात्मक तथ्य है। यशायाह ने घोषित किया कि "आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहां, थोड़ा वहां" यशायाह २८:६-१०।

अब आइये ! हम अपने हृदय में सत्य को स्थापित करें। बुनियादी तरीके से पवित्र शास्त्र का सच्चा उद्धार क्या है ?

१. परमेश्वर पर विश्वास

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो अपितु अनंत जीवन पाये" यूहन्ना ३:१६। पौलुस और सिलास ने फिलिप्पी के जेलर से ऐसा कहा कि "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पायेगा" प्रेरितों १६:३१। सत्य यह प्रकट करता है कि परमेश्वर पर विश्वास करना उद्धार के लिये अत्यावश्यक है। परन्तु केवल अकेला विश्वास किसी व्यक्ति को नहीं बचा सकता। याकूब ने दृढ़ता से कहा है कि "विश्वास भी यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है" याकूब २:१७। इस लिये हम विश्वास करके ही नहीं रुक सकते हैं क्योंकि यह सत्य का केवल एक अंश है। और अधिक है।

२. परमेश्वर की ओर मन फिराने (पश्चात्ताप) के साथ ईश्वरीय क्षमा

यीशु ने कहा, "मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी नाश होगे" लूका १३:३। परमेश्वर की यह आज्ञा है कि सभी जगह के सभी मनुष्यों के लिये पश्चात्ताप करना या मन फिराना अत्यंत आवश्यक है। "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है" प्रेरितों १७:३२। "यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है" १ यूहन्ना १:६। सत्य यह स्थापित करता कि पश्चात्ताप करके या पापों से मन फिराके उनसे मुक्ति पाना उद्धार के लिये अति आवश्यक है। परंतु यह सत्य को विश्वास से अलग नहीं ले जाता, अपितु यह केवल शक्ति निर्मित करता है, क्योंकि पापी मनुष्य को अपने पापों से मन फिराने के लिये परमेश्वर पर विश्वास रखना ही चाहिये। परन्तु पश्चात्ताप अकेला ही किसी व्यक्ति को बचा नहीं सकेगा। और अधिक सत्य बाकी है।

३. पापों की क्षमा के लिये प्रभु यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा

यीशु ने कहा "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा···" मरकुस १६:१६। "जिन्होंने उस बीते समय में आज्ञा न माना जब परमेश्वर नूह के दिनों में धीरज धर कर ठहरा रहा, और वह जहाज बन रहा था जिसमें बैठकर थोड़े लोग अर्थात् आठ प्राणी पानी के द्वारा बच गये। और उसी पानी का दृष्टान्त भी अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है" १ पतरस ३:२०-२१। यीशु मसीह की यह आज्ञा है कि पश्चात्ताप और पापों की क्षमा उसी के नाम में प्रचारित किये जावें। "सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम में किया जायेगा" लूका २४:४७ "पतरस ने कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले,··· प्रेरितों २:३८। और किसी के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के बीच में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें," प्रेरितों ४:१२। हनन्या ने कहा, अब क्यों देर करता है ? उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल," प्रेरितों २२-१६। सत्य यह स्थापित करता है कि, पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम में पानी का बपतिस्मा उद्धार के लिये अति आवश्यक है। परंतु यह पश्चात्ताप को प्रतिस्थापित नहीं करता परन्तु यहाँ फिर से वह केवल शक्ति निर्मित करता है जिस प्रकार यशायाह ने कहा है– "आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा, नियम पर नियम, नियम पर नियम, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ"। परन्तु पानी का बपतिस्मा अकेला किसी व्यक्ति को बचा नहीं सकता है, अतः यह आवश्यक है कि हम सद्भावना से संपूर्ण सत्य को जानें।

४. अन्य भाषाओं में बोलना पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को प्रमाणित करता है।

यीशु ने निकुदेमुस से कहा, "कि मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" यूहन्ना ३:५। प्रभु ने अपने चेलों को "आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा को पूरे होने की बाट जोहते रहो। क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में